IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर प्रदेश एवं बिहार के छात्रों के सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

सृष्टि गुप्ता (शोधार्थी), मनोविज्ञान विभाग,
जे.एस. विश्वविद्यालय ,शिकोहाबाद फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

सारांश : व्यक्तित्व मनोविज्ञान मनुष्य के व्यवहार, मानसिक प्रक्रियाओं तथा व्यक्तिगत विशेषताओं के वैज्ञानिक अध्ययन का एक व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। व्यक्तित्व व्यक्ति की संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक एवं व्यवहारिक विशेषताओं का ऐसा समन्वित स्वरूप है, जो उसके जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करता है। व्यक्ति के विचार, जीवन-मूल्य, निर्णय क्षमता, सामाजिक दृष्टिकोण तथा व्यवहारिक प्रवृत्तियाँ उसके व्यक्तित्व की विशिष्ट पहचान निर्मित करती हैं। वर्तमान अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों में पाए जाने वाले सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार के आयामों का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। सहज व्यक्तित्व व्यवहार व्यक्ति की सामाजिक संवेदनशीलता, सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता, सहयोगात्मक प्रवृत्ति, भावनात्मक स्थिरता तथा मानवीय मूल्यों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करता है। इसके विपरीत, कठोर व्यक्तित्व व्यवहार मानसिक दृढ़ता, आत्म-अनुशासन, उत्तरदायित्वबोध, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता तथा आत्म-नियंत्रण जैसे गुणों का परिचायक माना जाता है। व्यक्तित्व के ये दोनों आयाम किसी भी व्यक्ति के समग्र विकास में समान रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में इन दोनों व्यक्तित्व प्रवृत्तियों का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संदर्भों में तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह संकेत प्राप्त होता है कि उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व्यवहार में अनेक समानताएँ सांस्कृतिक विरासत एवं सामाजिक मूल्यों के कारण परिलक्षित होती हैं, जबकि क्षेत्रीय परिस्थितियों, शैक्षिक अवसरों, आर्थिक पृष्ठभूमि तथा सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव से कुछ विशिष्ट भिन्नताएँ भी विकसित होती हैं। शोध का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि व्यक्तित्व के स्वस्थ एवं संतुलित विकास के लिए सहजता एवं कठोरता दोनों का संतुलित समावेश आवश्यक है।

मुख्य शब्द : व्यक्तित्व मनोविज्ञान, सहज व्यक्तित्व व्यवहार, कठोर व्यक्तित्व व्यवहार, छात्र व्यक्तित्व, तुलनात्मक अध्ययन, व्यक्तित्व विकास, उत्तर प्रदेश एवं बिहार।

प्रस्तावना : भारत को विश्व के सबसे युवा देशों में से एक माना जाता है, जहाँ युवाओं की भूमिका सामाजिक, शैक्षिक एवं राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके युवा वर्ग की बौद्धिक क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व, व्यक्तित्वगत विशेषताओं एवं नैतिक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। छात्र जीवन मानव विकास की वह अवस्था है, जिसमें व्यक्ति के मूल्य, दृष्टिकोण, व्यवहारिक प्रवृत्तियाँ, सामाजिक चेतना तथा जीवन के प्रति उसकी समझ का निर्माण एवं परिष्कार होता है। इस कारण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान एवं व्यक्तित्व मनोविज्ञान दोनों ही क्षेत्रों में विशेष महत्त्व रखता है। व्यक्तित्व का निर्माण केवल जैविक अथवा मानसिक कारकों का परिणाम नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक अनुभवों, पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक अवसरों की अंतःक्रिया से विकसित होने वाली एक सतत प्रक्रिया है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व्यवहार को समझना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यही गुण भविष्य में उनके नेतृत्व कौशल, सामाजिक सहभागिता, व्यावसायिक सफलता तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

उत्तर प्रदेश एवं बिहार भारत के ऐसे राज्य हैं, जिन्होंने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक दृष्टि से भारतीय समाज को विशिष्ट योगदान प्रदान किया है। दोनों राज्यों की सांस्कृतिक विरासत, भाषाई निकटता तथा सामाजिक संरचना में अनेक समानताएँ विद्यमान हैं। इसके बावजूद आर्थिक विकास, शहरीकरण, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता एवं सामाजिक परिवर्तनों की गति में कुछ भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं, जिनका प्रभाव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ना स्वाभाविक है। इन्हीं संदर्भों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों के सहज एवं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा उनके व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं शैक्षिक आयामों की व्याख्या करता है।

सहज व्यक्तित्व व्यवहार की अवधारणा : सहज व्यक्तित्व व्यवहार से आशय व्यक्ति की उन मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक विशेषताओं से है, जो उसे सामाजिक रूप से अनुकूलनशील, संवेदनशील एवं सहयोगात्मक बनाती हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सामान्यतः मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं तथा दूसरों के साथ सकारात्मक एवं संतुलित संबंध स्थापित करने में सक्षम पाए जाते हैं। वे सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को सहज रूप से अनुकूलित कर लेते हैं तथा सामूहिक हितों को व्यक्तिगत हितों के साथ संतुलित करने का प्रयास करते हैं। सहज व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में दूसरों की भावनाओं को समझने, सामाजिक सहयोग प्रदान करने तथा समूहगत गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता निभाने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है। वे सामाजिक संबंधों के निर्माण एवं संरक्षण में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं और सामूहिक जीवन के मूल्यों को महत्त्व देते हैं। सहज व्यक्तित्व व्यवहार की प्रमुख विशेषताओं में सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण, सहयोगात्मक प्रवृत्ति, सामाजिक समायोजन क्षमता, भावनात्मक स्थिरता, सहिष्णुता, परोपकारिता, प्रभावी संचार कौशल तथा सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना प्रमुख रूप से सम्मिलित की जा सकती है। ये गुण व्यक्ति को सामाजिक रूप से अधिक स्वीकार्य एवं व्यवहारिक रूप से संतुलित बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, सहज व्यक्तित्व व्यवहार न केवल सामाजिक समरसता एवं मानवीय संबंधों को सुदृढ़ बनाता है, बल्कि व्यक्ति के मानसिक एवं भावनात्मक विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। सामाजिक जीवन में प्रभावी सहभागिता तथा सकारात्मक मानवीय दृष्टिकोण के विकास के लिए सहज व्यक्तित्व व्यवहार को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

कठोर व्यक्तित्व व्यवहार की संकल्पना : कठोर व्यक्तित्व व्यवहार से तात्पर्य उन मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारगत विशेषताओं से है, जो व्यक्ति को आत्म-अनुशासित, उद्देश्यपरक, दृढ़ इच्छाशक्ति से युक्त तथा उत्तरदायी बनाती हैं। मनोविज्ञान की दृष्टि से कठोरता को नकारात्मक प्रवृत्ति के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे व्यक्ति की मानसिक सुदृढ़ता, आत्म-नियमन एवं चुनौतियों का सामना करने की क्षमता के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। वास्तव में, व्यक्तित्व का यह आयाम व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को नियंत्रित करने तथा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयासरत रहने की प्रेरणा प्रदान करता है। कठोर व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में सामान्यतः आत्म-अनुशासन, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता, समय के प्रभावी प्रबंधन की क्षमता, संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में धैर्यपूर्वक कार्य करने की प्रवृत्ति, उत्तरदायित्वबोध, निर्णय लेने की दक्षता तथा आत्म-नियंत्रण जैसे गुण विकसित पाए जाते हैं। ऐसे व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भी अपने उद्देश्य के प्रति प्रतिबद्ध रहते हैं और उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी उपयोग करके सफलता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। व्यक्तित्व का यह पक्ष जीवन की चुनौतियों का सामना करने, व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व्यवहार की प्रमुख विशेषताएँ : उत्तर प्रदेश भारत का एक विशाल एवं सांस्कृतिक रूप से विविधतापूर्ण राज्य है, जिसकी सामाजिक एवं शैक्षिक संरचना विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को अनेक स्तरों पर प्रभावित करती है। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में भाषाई, सांस्कृतिक तथा सामाजिक विविधताएँ देखने को मिलती हैं, जिनका प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहारिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों में भी परिलक्षित होता है। सामान्यतः उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों में सामाजिक संबंधों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, पारिवारिक मूल्यों के प्रति सम्मान, नेतृत्व क्षमता, प्रतिस्पर्धात्मक सोच, सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता तथा उपलब्धि प्राप्त करने की उच्च आकांक्षा जैसे गुण देखने को मिलते हैं। राज्य में उपलब्ध विविध शैक्षणिक अवसरों तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की सशक्त परम्परा ने विद्यार्थियों में आत्म-अनुशासन, समय प्रबंधन एवं उपलब्धि-उन्मुख व्यवहार के विकास को प्रोत्साहित किया है।

बिहार के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व्यवहार की प्रमुख विशेषताएँ : बिहार भारतीय ज्ञान एवं शिक्षा परम्परा का एक ऐतिहासिक केन्द्र रहा है। प्राचीन काल में यह प्रदेश विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थानों एवं बौद्धिक परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध रहा है, जिसका प्रभाव आज भी शिक्षा के प्रति सामाजिक प्रतिबद्धता के रूप में देखा जा सकता है। वर्तमान समय में भी बिहार के विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति गहरी रुचि एवं उपलब्धि प्राप्त करने की प्रबल इच्छा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बिहार के विद्यार्थियों की व्यक्तित्वगत विशेषताओं में संघर्षशीलता, आत्मनिर्भरता, लक्ष्य के प्रति समर्पण, पारिवारिक उत्तरदायित्वों के प्रति प्रतिबद्धता, सहयोगात्मक दृष्टिकोण तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वयं को अनुकूलित करने की क्षमता प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। सीमित संसाधनों एवं सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के बावजूद सफलता प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प उनके व्यक्तित्व की एक विशिष्ट पहचान के रूप में उभरकर सामने आता है। बिहार के अनेक विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों में भी अपनी शिक्षा एवं व्यावसायिक लक्ष्यों के प्रति निरंतर समर्पित रहते हैं। उनकी मानसिक दृढ़ता एवं परिश्रमशीलता व्यक्तित्व के कठोर एवं सकारात्मक आयामों को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करती है।

उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों के सहज व्यक्तित्व व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण : उत्तर प्रदेश एवं बिहार दोनों ही राज्यों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना सामूहिक जीवन, पारिवारिक मूल्यों एवं सामाजिक सहयोग की भावना को विशेष महत्त्व प्रदान करती है। इसी कारण दोनों राज्यों के विद्यार्थियों में सहज व्यक्तित्व व्यवहार से संबंधित अनेक समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। सामाजिक संवेदनशीलता,

सहयोगात्मक दृष्टिकोण, पारिवारिक प्रतिबद्धता तथा सांस्कृतिक चेतना जैसे गुण दोनों राज्यों के विद्यार्थियों में व्यापक रूप से पाए जाते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों में सामाजिक नेतृत्व, सार्वजनिक गतिविधियों में सहभागिता तथा विविध सामाजिक परिवेश के साथ अनुकूलन की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक विकसित दिखाई देती है। दूसरी ओर, बिहार के विद्यार्थियों में सामूहिक सहयोग, संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में सामाजिक समायोजन तथा सामुदायिक समर्थन की भावना अधिक सशक्त रूप में परिलक्षित होती है। दोनों राज्यों के विद्यार्थियों में सहानुभूति, मानवीय संवेदनशीलता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों की उल्लेखनीय उपस्थिति यह संकेत देती है कि सहज व्यक्तित्व व्यवहार भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से गहराई से प्रभावित होता है।

उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों के कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण : कठोर व्यक्तित्व व्यवहार के संदर्भ में दोनों राज्यों के विद्यार्थियों में अनेक समान विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। आत्म-अनुशासन, लक्ष्याभिमुखता, आत्म-नियंत्रण तथा उपलब्धि प्राप्त करने की प्रेरणा जैसे गुण उत्तर प्रदेश एवं बिहार दोनों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों में व्यापक शैक्षणिक अवसरों, प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं की तैयारी तथा संस्थागत संसाधनों की उपलब्धता के कारण संगठित अध्ययन, आत्म-प्रबंधन एवं नेतृत्व क्षमता का अपेक्षाकृत अधिक विकास देखने को मिलता है। इसके विपरीत, बिहार के विद्यार्थियों में सीमित संसाधनों के बीच निरंतर संघर्ष करते हुए सफलता प्राप्त करने की इच्छा, मानसिक दृढ़ता एवं अनुकूलन क्षमता अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

व्यक्तित्व व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक : विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया अनेक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं शैक्षिक कारकों से प्रभावित होती है। इनमें पारिवारिक वातावरण का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। परिवार ही वह प्रथम सामाजिक संस्था है, जहाँ व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, अनुशासन, भावनात्मक सुरक्षा एवं व्यवहारिक कौशलों को सीखता है। परिवार द्वारा प्रदान किया गया भावनात्मक समर्थन एवं नैतिक मार्गदर्शन व्यक्तित्व विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। शैक्षणिक संस्थान भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालय एवं विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को बौद्धिक विकास के साथ-साथ नेतृत्व क्षमता, सामाजिक सहभागिता एवं समूहगत अनुभव प्राप्त करने के अवसर प्रदान करते हैं। सकारात्मक शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं सामाजिक दक्षताओं के विकास को प्रोत्साहित करता है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक व्यक्तित्व के स्वरूप को निर्धारित करने वाले महत्त्वपूर्ण घटकों में सम्मिलित हैं। समाज के मूल्य, सांस्कृतिक मान्यताएँ एवं सामुदायिक जीवन व्यक्ति के व्यवहार एवं दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार आर्थिक परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक अवसरों, आत्मविश्वास तथा जीवन के प्रति उनकी आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकती हैं। वर्तमान समय में तकनीकी एवं डिजिटल परिवेश भी व्यक्तित्व विकास का एक प्रभावशाली कारक बन चुका है। डिजिटल माध्यमों ने विद्यार्थियों को ज्ञान, संचार एवं नवाचार के अनेक अवसर प्रदान किए हैं, वहीं इनके कारण सामाजिक अलगाव, मानसिक तनाव एवं डिजिटल निर्भरता जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। अतः व्यक्तित्व के स्वस्थ एवं संतुलित विकास के लिए इन सभी कारकों की समुचित भूमिका को समझना एवं उनका सकारात्मक उपयोग करना आवश्यक है।

तुलनात्मक विश्लेषण : उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व्यवहार के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों राज्यों के छात्रों में व्यक्तित्व संबंधी समानताएँ अपेक्षाकृत अधिक व्यापक रूप से विद्यमान हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि दोनों राज्यों के विद्यार्थी भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं, पारिवारिक मूल्यों तथा समान सामाजिक अनुभवों से प्रभावित होते हैं। परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व में सामाजिक उत्तरदायित्व, सहयोगात्मक दृष्टिकोण, उपलब्धि प्राप्त करने की प्रेरणा तथा सामुदायिक चेतना जैसे गुण समान रूप से विकसित होते दिखाई देते हैं। यद्यपि व्यक्तित्व के आधारभूत गुणों में पर्याप्त समानता पाई जाती है, तथापि सामाजिक एवं क्षेत्रीय परिस्थितियों के प्रभाव से कुछ व्यवहारगत अंतर भी देखने को मिलते हैं। शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता, आर्थिक पृष्ठभूमि, सामाजिक अनुभवों की विविधता तथा क्षेत्रीय परिवेश व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति को प्रभावित करते हैं। ये अंतर व्यक्तित्व की मूल संरचना को परिवर्तित नहीं करते, बल्कि उसके व्यवहारिक एवं परिस्थितिजन्य स्वरूप को प्रभावित करते हैं।

परिणामों की व्याख्या एवं विश्लेषण : प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि विद्यार्थियों का व्यक्तित्व व्यवहार किसी एक कारक का परिणाम नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक तत्वों की संयुक्त एवं गतिशील प्रक्रिया का प्रतिफल होता है। व्यक्तित्व का विकास व्यक्ति के परिवेश, अनुभवों तथा सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से निरंतर होता रहता है। उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थी समान भारतीय सांस्कृतिक परिवेश का हिस्सा होने के कारण व्यक्तित्व के अनेक आयामों में उल्लेखनीय समानताएँ प्रदर्शित करते हैं। इसके बावजूद क्षेत्रीय अनुभवों एवं विकासात्मक अवसरों की भिन्नता के कारण उनके व्यवहार में कुछ विशिष्ट अंतर स्वाभाविक रूप से दिखाई देते हैं। सहज व्यक्तित्व व्यवहार के संदर्भ में यह तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि दोनों राज्यों के विद्यार्थी सामाजिक संबंधों एवं पारिवारिक मूल्यों को अत्यधिक महत्त्व प्रदान करते हैं। भारतीय समाज में परिवार केवल पालन-पोषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवहन का प्रमुख आधार भी है। संयुक्त एवं अर्द्ध-संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था विद्यार्थियों में सामाजिक सहयोग, उत्तरदायित्वबोध तथा सामूहिक चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में सामाजिक अनुकूलनशीलता, भावनात्मक जुड़ाव एवं सहयोगात्मक व्यवहार अपेक्षाकृत अधिक विकसित पाया जाता है।

बिहार के विद्यार्थियों में प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए सामाजिक सहयोग एवं संघर्षशीलता की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। दूसरी ओर, उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, सार्वजनिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता तथा संगठनात्मक व्यवहार की प्रवृत्तियाँ अपेक्षाकृत अधिक विकसित दिखाई देती हैं। इन अंतरों को दोनों राज्यों की सामाजिक संरचना, शैक्षिक अवसरों एवं क्षेत्रीय अनुभवों के संदर्भ में समझा जा सकता है।

कठोर व्यक्तित्व व्यवहार के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों राज्यों के विद्यार्थी अपने शैक्षणिक एवं व्यावसायिक उद्देश्यों के प्रति गंभीर एवं प्रतिबद्ध दृष्टिकोण रखते हैं। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण, रोजगार संबंधी चुनौतियाँ तथा सामाजिक अपेक्षाएँ विद्यार्थियों में आत्म-अनुशासन, उपलब्धि-अभिप्रेरणा एवं लक्ष्य-निष्ठा के विकास को प्रोत्साहित करती हैं। बिहार के विद्यार्थियों में सीमित संसाधनों के बावजूद सफलता प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प एवं संघर्षशीलता अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जबकि उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों में विविध शैक्षिक अवसरों एवं संस्थागत संसाधनों के कारण योजनाबद्ध तैयारी एवं प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण का विकास अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देता है।

व्यक्तित्व व्यवहार एवं शैक्षणिक उपलब्धि : शोध एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह तथ्य स्थापित हुआ है कि व्यक्तित्व की विशेषताओं एवं शैक्षणिक उपलब्धियों के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। जिन विद्यार्थियों में आत्म-अनुशासन, समय के प्रभावी प्रबंधन, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता एवं आत्म-नियंत्रण जैसे गुण विकसित होते हैं, वे प्रायः शैक्षणिक गतिविधियों में अधिक सफल पाए जाते हैं। कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का सकारात्मक पक्ष विद्यार्थियों को योजनाबद्ध अध्ययन, नियमित अभ्यास एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करता है। इसके विपरीत, सहज व्यक्तित्व व्यवहार विद्यार्थियों को सहयोगात्मक अधिगम, समूहगत गतिविधियों, प्रभावी संवाद एवं सामाजिक सहभागिता के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करता है। ऐसे विद्यार्थी सामूहिक कार्यों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाते हैं तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सकारात्मक योगदान देते हैं। शैक्षणिक उत्कृष्टता की दृष्टि से यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व के दोनों आयाम समान रूप से आवश्यक हैं। अत्यधिक कठोरता व्यक्ति को केवल प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण तक सीमित कर सकती है, जबकि अत्यधिक सहजता लक्ष्य प्राप्ति की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। इसलिए संतुलित व्यक्तित्व ही प्रभावी एवं समग्र शैक्षणिक विकास का आधार माना जा सकता है।

व्यक्तित्व व्यवहार एवं भावनात्मक संतुलन : वर्तमान सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों में भावनात्मक संतुलन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का एक अनिवार्य घटक बन चुका है। परीक्षा संबंधी तनाव, कैरियर की अनिश्चितताएँ, सामाजिक प्रतिस्पर्धा एवं पारिवारिक अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसी परिस्थितियों में सहज व्यक्तित्व व्यवहार विद्यार्थियों को सामाजिक एवं भावनात्मक समर्थन प्रदान करने में सहायक सिद्ध होता है। सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, सकारात्मक संवाद एवं सामाजिक जुड़ाव जैसे गुण विद्यार्थियों को तनावपूर्ण परिस्थितियों से प्रभावी रूप से उबरने में सहायता प्रदान करते हैं। वहीं कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का आत्म-नियंत्रण, धैर्य एवं मानसिक दृढ़ता संबंधी पक्ष विद्यार्थियों को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में संतुलित एवं प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है।

व्यक्तित्व व्यवहार एवं नेतृत्व क्षमता : नेतृत्व एक बहुआयामी व्यक्तित्व गुण है, जिसके प्रभावी विकास के लिए सहज एवं कठोर दोनों प्रकार की विशेषताओं का संतुलित समावेश आवश्यक होता है। एक सफल नेता में संवेदनशीलता, सहयोगात्मक दृष्टिकोण एवं सामाजिक समझ के साथ-साथ निर्णय क्षमता, अनुशासन एवं उत्तरदायित्व जैसे गुण भी विद्यमान होने चाहिए। उत्तर प्रदेश एवं बिहार दोनों राज्यों के विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता के पर्याप्त अवसर एवं संभावनाएँ विद्यमान हैं। छात्र संगठनों, सामुदायिक कार्यक्रमों, शैक्षणिक गतिविधियों एवं सामाजिक सहभागिता के माध्यम से विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल का विकास संभव होता है। ऐसे अनुभव न केवल उनके व्यक्तित्व को परिपक्व बनाते हैं, बल्कि उन्हें सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए भी तैयार करते हैं।

व्यक्तित्व व्यवहार एवं सांस्कृतिक मूल्य: सांस्कृतिक मूल्य व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया के मूल आधारों में से एक हैं। उत्तर प्रदेश एवं बिहार दोनों राज्यों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, पारिवारिक सम्मान एवं सामूहिक चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। भारतीय संस्कृति में मानवता, परोपकार, सह-अस्तित्व एवं सार्वभौमिक बंधुत्व जैसे आदर्श सामाजिक समरसता एवं सहयोगात्मक व्यवहार को प्रोत्साहित करते हैं। ये मूल्य सहज व्यक्तित्व व्यवहार के विकास को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, आत्म-संयम, कर्तव्यनिष्ठा, परिश्रम एवं अनुशासन जैसे सांस्कृतिक मूल्य कठोर व्यक्तित्व व्यवहार के सकारात्मक आयामों को सुदृढ़ करते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि सांस्कृतिक मूल्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को सामाजिक रूप से उत्तरदायी एवं नैतिक दृष्टि से संतुलित बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीवन-कौशल आधारित शिक्षा को पाठ्यक्रम का प्रभावी भाग बनाया जाना आवश्यक है। संचार कौशल, भावनात्मक प्रबंधन, निर्णय क्षमता, समस्या समाधान एवं

नेतृत्व प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में उल्लेखनीय योगदान प्रदान कर सकते हैं। इसी प्रकार, विद्यार्थियों को सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों, सामाजिक उत्तरदायित्व संबंधी गतिविधियों एवं नेतृत्व विकास कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। इससे उनके व्यक्तित्व में सहजता एवं मानसिक दृढ़ता का संतुलित विकास संभव हो सकेगा। शैक्षणिक संस्थानों में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाओं को भी सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थी अपनी व्यक्तिगत, सामाजिक एवं भावनात्मक समस्याओं का वैज्ञानिक एवं प्रभावी समाधान प्राप्त कर सकें। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

- विद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में नियमित व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं जीवन-कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अनिवार्य रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- अभिभावकों के लिए व्यक्तित्व विकास एवं किशोर मनोविज्ञान से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
- विद्यार्थियों को नेतृत्व विकास, सामाजिक सेवा एवं सामुदायिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को समान एवं गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- डिजिटल एवं तकनीकी संसाधनों के सकारात्मक एवं संतुलित उपयोग के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
- सभी शैक्षणिक संस्थानों में मनोवैज्ञानिक परामर्श एवं मार्गदर्शन केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए।
- व्यक्तित्व मूल्यांकन एवं जीवन-कौशल विकास कार्यक्रमों को छात्र कल्याण योजनाओं का नियमित एवं संरचित भाग बनाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष : प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व्यवहार में अनेक समान मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक विशेषताएँ विद्यमान हैं, यद्यपि कुछ व्यवहारगत एवं परिस्थितिजन्य भिन्नताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। दोनों राज्यों के विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, सहयोगात्मक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान तथा उपलब्धि प्राप्त करने की सकारात्मक प्रेरणा जैसे गुण पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त आत्म-अनुशासन, दृढ़ संकल्प, संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता तथा लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता जैसे व्यक्तित्वगत गुण भी उनके व्यवहार में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। अध्ययन से यह तथ्य भी उजागर होता है कि व्यक्तित्व का समग्र एवं स्वस्थ विकास किसी एक व्यवहारिक प्रवृत्ति पर आधारित नहीं होता, बल्कि सहजता एवं मानसिक दृढ़ता के संतुलित विकास पर निर्भर करता है। सहज व्यक्तित्व व्यवहार व्यक्ति को मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक सामंजस्य तथा सकारात्मक पारस्परिक संबंधों के निर्माण में सक्षम बनाता है, जबकि व्यक्तित्व का कठोर आयाम उसे आत्म-नियंत्रित, उत्तरदायी, धैर्यवान एवं उद्देश्यपरक जीवन-दृष्टि प्रदान करता है। जब ये दोनों आयाम संतुलित रूप से विकसित होते हैं, तब विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक एवं व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं, बल्कि वे सामाजिक एवं नैतिक उत्तरदायित्वों

के निर्वहन में भी अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी संकेत करते हैं कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माण बहुआयामी सामाजिक प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है। पारिवारिक वातावरण, सांस्कृतिक परम्पराएँ, सामाजिक अनुभव, शैक्षणिक अवसर, आर्थिक परिस्थितियाँ तथा समकालीन सामाजिक परिवर्तनों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व्यवहार पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। उत्तर प्रदेश एवं बिहार जैसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्यों के संदर्भ में व्यक्तित्व व्यवहार का अध्ययन यह दर्शाता है कि भारतीय सामाजिक संरचना विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, सहयोग, आत्म-अनुशासन तथा संघर्षशीलता जैसे गुणों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया को समग्र एवं संतुलित दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है। शिक्षा प्रणाली, व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों तथा मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेपों के निर्माण में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कारकों को समुचित महत्त्व प्रदान किया जाना चाहिए। यदि विद्यार्थियों में सहजता, आत्म-अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, भावनात्मक परिपक्वता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का संतुलित विकास सुनिश्चित किया जाए, तो वे न केवल एक सफल एवं सक्षम नागरिक बनेंगे, बल्कि समाज के सकारात्मक एवं रचनात्मक परिवर्तन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकेंगे।

इस प्रकार, उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विद्यार्थियों के सहज-कठोर व्यक्तित्व व्यवहार का अध्ययन भारतीय व्यक्तित्व मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान एवं सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में नवीन शोध संभावनाओं को उद्घाटित करता है तथा व्यक्तित्व विकास की संतुलित एवं मानवीय अवधारणा को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1.ऑलपोर्ट, जी. डब्ल्यू. (1937). पर्सनैलिटी : ए साइकोलॉजिकल इंटरप्रिटेशन। न्यूयॉर्क : हेनरी होल्ट एंड कम्पनी।

2.ऑलपोर्ट, जी. डब्ल्यू. (1961). पैटर्न एंड ग्रोथ इन पर्सनैलिटी। न्यूयॉर्क : होल्ट, राइनहार्ट एंड विन्स्टन।

3.बंडूरा, एल्बर्ट (1977). सोशल लर्निंग थ्योरी। एंगलवुड क्लिफ्स : प्रेन्टिस हॉल।

4.बंडूरा, एल्बर्ट (1986). सोशल फाउंडेशन्स ऑफ थॉट एंड एक्शन : ए सोशल कॉग्निटिव थ्योरी। प्रेन्टिस हॉल।

5.कैटल, आर. बी. (1950). पर्सनैलिटी : ए सिस्टेमैटिक थियोरेटिकल एंड फैक्चुअल स्टडी। न्यूयॉर्क : मैकग्रा-हिल प्रकाशन।

6.आइज़ेंक, एच. जे. (1970). द स्ट्रक्चर ऑफ ह्यूमन पर्सनैलिटी। लंदन : मेथ्यून प्रकाशन।

7.फ्रायड, सिग्मंड (1923). द ईगो एंड द इड। लंदन : होगार्थ प्रेस।

8.हॉल, कैल्विन एस. एवं लिंडज़े, गार्डनर (1978). थ्योरीज़ ऑफ पर्सनैलिटी। न्यूयॉर्क : जॉन वाइली एंड सन्स।

9.मैस्लो, अब्राहम एच. (1954). मोटिवेशन एंड पर्सनैलिटी। न्यूयॉर्क : हार्पर एंड रो पब्लिशर्स।

9.रोजर्स, कार्ल आर. (1961). ऑन बिकमिंग ए पर्सन। बोस्टन : हॉटन मिफ्लिन कम्पनी।

10.स्किनर, बी. एफ. (1953). साइंस एंड ह्यूमन बिहेवियर। न्यूयॉर्क : मैकमिलन कम्पनी।

11.मंगल, एस. के. (2018). सामान्य मनोविज्ञान। नई दिल्ली : पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

12.सिंह, अरुण कुमार (2015). उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान। नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।

13.शर्मा, आर. एन. (2012). शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली : सुरजीत पब्लिकेशन्स।

14.पाण्डेय, जी. (2017). व्यक्तित्व मनोविज्ञान। आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।